TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4477**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

॥६०॥ भुवननइ विषइ प्रदीप समान श्रीवीरप्रतइ नमस्कार करीनइ कहुं छुं अज्ञानलोकनइ ज्ञान नइ काजइ जीवनउ स्वरूप विचार कांइक जिम कहिउ पूर्वलेआचार्ये इति ॥१॥

॥६०॥ भुवणपईवं वीरं नमिऊण भणामि अबुहबोहत्थं जीवसरूवं किंचिवि जह भणियं पुव्वसूरी

तिहां जीव माहि बीजा संसारी जीव एक त्रस बीजा थावर संसारी पृथिवी काय अप काय तेउ काय वायुकाय वनस्पतिकाय ए पांच थावर जाणि ॥२॥
सिद्ध मुक्त ते सिद्ध संसारी ते संसारी

हिं ॥१॥ जीवा मुत्ता संसारिणो य तसथावरा य संसारी पुढविजलजलणवाऊ वणस्सई थावरा नेया ॥२॥

तिहां पृथिवीकाय मणि रत्न परवाली हिंगुल हरिताल मणसिल पारउ सोनउ आदि देईनइ सात धातु सोनागेरु धवली खडी पांडु माटी अरणेटउ अभ्रक पलेवउ धवली माटी फटिक रत्न

फलिह मणि रयण विद्दुम हिंगुल हरियाल मणसिल रसिंदा कणगाइ धाउ सेढी वन्निय अरणे

पलेवउ कोमल पीयलवर्णी माटी अभ्रक तूरी माटी पाषाण अनेक जाति सुरमउ काजलउ लूणविडल पृथिवीकाय ना भेद ॥४॥
पाषाण सिलावाला खारी माटी धवलउ लवण खार सादिक जाणिवा

ट्टय पलेवा ॥३॥ अब्भय तूरी ऊसं मट्टी पाहाण जाइओ णेगा सोवीरंजण लूणाइ पुढवि भेया

हिवइ अपकायना भेद कहइ भूमिनउं पाणी आकाशनउं पाणी उसकाउ हिम गड़ा वरसाल धूमरि ए घनोदधि पाणी इत्यादिक अनेक भेद जाणिवा ॥५॥
इम अपकायना भेद

इच्चाइ ॥४॥ भोमंतरिक्खमुदगं ओसा हिम करग हरितणु महिया हुंति घणोदहिमाई भेया णे 1
२

यन्तसिक्तदडवह् श्रृंगार काल मान्दा श्रगति उत्का श्राका श्राकास वास भिक्तनीय श्रगानिकायाली वसांसद जाणिवा मसीतुहि
कामः मनीश्रगि धीयणीश्र श्राति मुख

गतश्रान्तस्य धृडगालजालमुमुरउन्कीसीणकणगविह्नमाइया श्रगणि छिन्नालीलिया ग

वीतइ॥६॥ डोयायवाजता सहीसहीनडवाउतैतत्र किवायमीडला मुख मेदवाडक्ष गृहनवाक्ष छिदीरश्राधार प्रबुविष उपाधिक
श्रागायकवाकरश कलितवाय काशवासुइवेल साम सुखवात नैत्रका, वात लासमकाहयाकडनेत्रधनवातन

यत्रा सिणलुहीय इ अश्रामगत्तङ्क लियाँ मट्ठ लिमदसुठगुरु वाँधाय घणमणु यातरा श्मा

नसवाधुवतावताणिसूयजाणि छिवजवनस्पतिकायनालिदकदहनग्रमा छिनशिसीतनडविययकत्याव छियीनवनस्यतीकावनाभे
वासही॥७॥ धराणशबीधक पंचनस्पतिकायनाजलन नाडीवानडयकवाणी

सेयारलुवाउकाय मग ७ साहारणपज्जेसा वणसडीवाडदासुपवणाया छिसिमगीनागा

तिसाधारणवनस्पति कंदा श्रीकृष्ण नवा जवाकोपमलस्य पीतवर्ण पालीउपरि सुकोतदवयीकालिजल श्राका श्रादालीन श्रत
कायनाविवग॥८॥ बहुरिक्तला मापान कूलणि लामवल रंछिदोकतेसफोफ नीलीदलिकरकसुरा

तणू रगासादहणातिक पकंदा श्रीकृष्ण किसलय युगमा सबालसमिफोडाय श्रलीक

गाउर माघ वसुभ मेराडाक पालीषउन्मु कलिधारहिमफलसर्वति गूढ सात्व शीमती सीधिमकनसडा।यीपंत्र
क्ल॥ कृत्यश्राप्त्रिक सीतमाडीपत्रे श्रमैतकाल

वगाकारमोझ मझूलाधगयलीका प रवलमलयकेलीचसवी गूढसिराइसिणाइपवाइ

2

थोहरि कुमरि गुग्गुलि गिलोयपमुहाइ छिन्नरुहा १० इच्चाइणो अणेगा हवंति भेया अणंत-
काया णं तेसिं परिजाणणत्थं लक्खणमेयं सुए भणियं ११ गूढसिरसंधिपव्वं
समभंगमहीरुहं च छिन्नरुहं साहारणं सरीरं तव्विवरीयं च पत्तेयं १२ एगसरीरे एगो जीवो जेसिं
तु ते य पत्तेया फलफुल्लछल्लिकट्ठा मूलगपत्ताणि बीयाणि १३ पत्तेयतरुं मुत्तुं पंच वि पुढवाइणो
सयललोए सुहुमा हवंति नियमा अंतमुहुत्ताउ अदिस्सा १४ संखकवड्डय गंडुल ज- २

लोय चंदणग अलस लहगाई मेहरि किमि पूयरगा बेइंदिय माइवाहाई १५ गोमीमंकण
जूया पिपीलि उद्देहिया य मक्कोडा इल्लिय घयमिल्लीओ सावय गोकीडजाईओ १६ गद्दह-
य चोरकीडा गोमयकीडा य धन्नकीडा य कुंथु गोवालि इलिया तेइंदिय इंदगोवाई
१७ चउरिंदिया य विच्छू ढिंकुण भमरा य भमरिया तिड्डा मच्छिय डंसा मसगा कंसारी कविल
डोलाई १८ पंचिंदिया य चउहा नारय तिरिया मणुस्स देवा य नेरइया सत्तविहा नायव्वा 3

जलचरपाणीमांहिं ... स्थलचर ... खिचरा ... त्रिविध ... सुसमारयाणीमांहिं माछलापाणीमांहिं काछबा ग्राह
मीं ... स्थलचर ... जलचर ...

पुढविसेयणा ।१९ जलयर थलयरखयरा ति विहा पंचेंदिया तिरिक्खा य सुसुमारमच्छक।

... चउपद उरपरिसर्प भुजपरिसर्प ... थलचर ... त्रिविध ... उरपरिसाप
... ... भुजपरिसाप ... ... विस्तारे कहिवा सही

च्छव गाहाय मगराय जलचारी २० चउप्पय उरपरिसप्पा भुयपरिसप्पा य थलयरा तिविहा गो

भुजपरिसाप ... ... खेचर ... धर्मपंखी ... ... चर्मपंखी ... ... नरलोक ... ...
... ...

सप्पनउलपमुहा बोधव्वा ते समासेणं २१ खयरा रोमयपक्खी चम्मयपक्खी य पायडा चेव

... ...
... ...

नरलोयाउ बाहिं समुग्गपक्खी विययपक्खी २२ सव्वे जलथलखयरा समुच्छिमा गब्भया दुहा

... ...
... ...
... ...

हुंति कम्माकम्मगभूमि अंतरदीवा मणुस्सा य २३ दसहा भवणाहिवई अट्ठविहा वाण ५

विजयकारे वैमानिक देवता ... पनर भेद ... सिद्ध ... तीर्थ ... अतीर्थ ... ए जीवना ... संक्षेप ... करीने
... ... करी कहिवा सही
... ... २४ २५

मंतरा हुंति जोईसिआ पंचविहा दुविहा वेमाणिया देवा २४ सिद्धा पनरसभेया तित्थातित्थ

जीवविगप्पा ... ... ए जीवना ... ... शरीर ... ...
... ...

इ सिद्ध भेएणं एएसिं खेवेणं जीवविगप्पा समक्खाया २५ एएसिं जीवाणं सरीरमाउठिई

... ... जीवा ... ... ॥२६॥ ... ...

सकायंमि पाणा जोणिपमाणं जेसिं जं अत्थि तं भणिमो २६ अंगुल असंखभागो सरी

... ... वनस्पती ... ... बारह जोयण कोस तीन
... ॥२७॥

रमेगिंदिआण सव्वेसिं जोयणसहस्समहियं नवरं पत्तेयरुक्खाणं २७ बारस जोयण तिन्ने

... ... सातमी नरक ...
... ...

व गाउआ जोयणं च अणुकमसो बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय देहमुच्चत्तं २८ धणुसयपंच

यमाणा नेरइया सत्तमाइ पुढवीए तत्तो अद्धद्धूणा नेया रयणप्पहा जाव ॥३०॥ जोयणस
हस्समाणा मच्छा उरगा य गब्भया हुंति धणुयपुहुत्तं पक्खिसु भुयचारी गाउयपुहुत्तं ॥३१॥
खयरा धणुयपुहुत्तं भुयगा उरगा य जोयणपुहुत्तं गाउयपुहुत्तमित्ता समुच्छिमा चउप्पया
भणिया ॥३२॥ छच्चेव गाउयाइं चउप्पया गब्भया मुणेयव्वा कोसतिगं च मणुस्सा उक्कोसस
रीरमाणेणं ॥३३॥ ईसाणंतसुराणं रयणीउ सत्त हुंति उच्चत्तं दुग दुग दुग चउ गेविज्जणुत्तरेसु इ 4

क्किक्कपरिहाणी ॥३४॥ बावीसा पुढवीए सत्त य आउस्स तिन्नि वाउस्स वाससहस्सा दस तरुग
णाण तेऊ तिरत्ताउ ॥३५॥ वासाणि बारसाऊ बेइंदियाणं तेइंदियाणं तु अउणापन्नदिणा
इं चउरिंदीणं तु छम्मासा ॥३६॥ सुरनेरइयाण ठिई उक्कोसा सागराणि तित्तीसं चउप्पयति
रियमणुस्सा तिन्नि य पलिओवमा हुंति ॥३७॥ जलयरउरभुयगाणं परमाऊ होइ पुव्व
कोडीउ पक्खीणं पुण भणिओ असंखभागो य पलियस्स ॥३८॥ सव्वे सुहुमा साहारणा य 5

मणुष्यनी स्थितिमान मनुष्या अंतर्मुहूर्तनउ मध
नामलघुप्रमाणिद्धि उत्कृष्टा मध्य पिणाउ
संमूर्छिममनुष्य

समुछिममणुस्साय उक्कोसजहन्नेणं अंतमुहुत्तं चियजियंति ॥ ओगाहणाउमाणं एवंसं

एकेंद्रिय सर्वे पृथवी अपतेउवाउ स्वकाये असंख्याती उत्सर्पिणी
नामस्याख्यान इविसेस इतिविसेषज्ञातिव्य ॥ ५ ॥ प्रत्येकवनस्पति अनंतकाय वनस्पति

खेवउ सम्मक्खायं जे पुण इत्थ विसेसा विसेससुत्ताउ ते नेया ॥ ४४ ॥ एगिंदिया य सव्वे असंखउसप्पिणी सकायंमि

अनंतकाय अनंती अवसर्पिणी संख्याताइ जा खरसवें मातआगलगइ पंचेंद्रि यतिर्यंच
उपजइ मरइ ॥ ४५ ॥ बितेंद्रीय चउरिंद्रिय आपणी कायरइ मनुष्यरह इनिहोसांनव रमसंख्या

उववज्जंति मरंति य अणंतकाया अणंताउ ॥ ४५ ॥ संखिज्जसमा विगला सत्तट्ठभवा पणिंदितिरि

वर्षआउषऊआवमउ कपजइ आपणी नारकीदेवताआपणीकायने देसेप्रकारेनीवराप्राणकहवइ पांचइंद्रीऊसासआऊषउ तनबल
असंख्यातवर्षआउषउ कायनविषय इविसयकूपजइनहीं ॥ ४६ ॥ मनोबलवचनबलकायबल ॥ १० ॥

मणुआ उववज्जंति सकाए नारयदेवाय नो चेव ॥ ४६ ॥ दसहा जियाण पाणा इंदिय ऊसासआउबलरूवा

पांच एकेंद्रियानइ बेइंद्रिनइ छप्राणतेइंद्रीनइ सातप्राण चउरिंद्रीनइ आठप्राणहुइ असन्नीपंचेंद्रीतिर्यंचमनुष्यनइ नइविसय असंन्नीनइ
॥ ४७ ॥ सन्नीपंचेंद्रियतिर्यंचमनुष्य नवप्राणसन्नीनइ १० प्राणजाणि

एगिंदिएसु चउरो विगलेसु छ सत्त अट्ठेव ॥ ४७ ॥ असन्नि सन्नि पंचिंदिएसु नवदसकमेण ५

तियाप्राणसंघातइवियोगजनुआ तेजीवानइ कहीयाइ मरण ॥ ४८ ॥ इणइप्रकारइआणोरपार जेमसारसंसारनइ विषयके ह्नमी
बका पारकरीनइ रहितएहवउ तीसंमि कहतांबीहामणउ

बोधव्वा तेहिं सह विप्पओगो जीवाणं भन्नए मरणं ॥ ४८ ॥ एवं अणोरपारे संसारसायरंमि भीमंमि

पामिउ अनंतीवेलाअनंत जीवइजिणइजिणधर्मपामिउनहीतेणा तिमचउरासीलाखसंख्याये निरीहवइ जीवाणइ जीवयोनि
बिउ एहवा संसारमाहिं ॥ ४९ ॥

मि पत्तो अणंतखुत्तो जीवेहिं अपत्तधम्मेहिं ॥ ४९ ॥ तह चउरासी लक्खा संखा जोणीण होइ जी

जीवरूप पृथिव्यादिकच्यारि एविवीअ च्यारिमाहि प्रत्येकइसात दशलाखजीवयोनिप्र चउदहलाखजीवयोनि हुवइ इयरेसु
जिवाइऊ प्रत्येकवनस्पति सातसातलाखयोनि ॥ ५० ॥ प्रत्येकवनस्पतीनी कहतांअनंतकायनइ विषइ

वाणं पुढवाईण चउण्हं पत्तेयं सत्तसत्तेव ॥ ५० ॥ दसपत्तेयतरूणं चउदसलक्खा हवंति इयरेसु

बेइंद्रीतेइंद्रीचउरिंद्रीप्रत्येकइ च्यारिलाखजीवयोनिपंचेंद्रियतिर च्यारिलाखनारकीजीवयोनिच्या मनुष्यमाहिचउदहलाख
दोदोलाखजीवयोनिजाणइ ॥ यंचनीहुवइ ॥ ५१ ॥ च्यारिलाखदेवतानीयोनि जीवायोनिहुवइ

विगलिंदिएसु दो दो चउरो पंचिंदितिरियाणं ॥ ५१ ॥ चउरो २ नारयसुरेसु मणुआण चउदस

एकठाकीया सगलीजीवयोनि चउरासीलाखहुवइ जीवयोनिरी सिद्धांरहनहीशरीर सिद्धांरहनही आऊषउनहीं
नही ॥ ५२ ॥ प्राणनही योनि कथजिवन ६

हवंति संपिंडिआ य सव्वे चुलसीलक्खाउ जोणीणं ॥ ५२ ॥ सिद्धाण नत्थि देहो नाउकम्मं नपाण

सिद्धिगतिप्राप्ता जीवा अनंता ... कालमनाद्यनंतं ... निगोदादिजीवा ... कर्मवशात् भ्रमंति ... कालोऽनादिनिधनः ... जिनवचनमलभमानाः

ण जाणीउ साइ अणंतं तेसिं ठिइ जिणिंदागमे भणिआ ४९ कालो अणाइनिहणो जोणी १५

हणंमि भीसणे इत्थ भमिआ भमिहिंति चिरं जीवा जिणवयणमलहंता ५० ता संपइ संपत्ते

... श्रीशांतिसूरिभिः शिष्टे कथिते ... धर्मे उद्यमं कुरुत ... एष जीवविचारः ... अल्पसंक्षेपमतिरुचीनां ...

मणुअत्ते दुल्लहे वि सम्मत्ते सिरिसंतिसूरिसिट्ठे करेह भो उज्जमं धम्मे ५१ एसो जीववियारो

संखेवरुईण जाणणा हेऊ संखित्तो उद्धरिओ रुद्दाओ सुयसमुद्दाओ ५२ इति श्रीजीवविचार

प्रकरणं॥ ॥ शुभमस्तु ६